बाइबल टीचर

वर्ष 19 अक्टूबर 2022 अंक 11

सम्पादकीय

यूहन्ना का बपतिस्मा

स्वर्ग से या मनुष्यों से? मत्ती के तीन अध्याय में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आकर यहूदियों के जंगल में यह प्रचार करने लगा कि मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के आस-पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आये। (यूहन्ना3)।

फिर पढ़ते हैं कि यीशु ने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया और लिखा है, यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के बाद यीशु तुरन्त पानी में से ऊपर आया। और फिर एक आकाशवाणी हुई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।" (यूहन्ना 3:13-17)। वह यानि यीशु एक बार मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था कि माहायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा कि तू ये काम किस अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किसने दिया है? यीशु ने उनको यह उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं, यदि वह मुझे तुम बताओगे तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूँ। उसने पूछा कि मुझे यह बताओ कि "यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था?" स्वर्ग से या मनुष्य की ओर से था? तब वे आपस में विवाद करने लगे कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह हम से कहेगा फिर तुम प्रतिती क्यों नहीं करते? यदि हम कहें कि मनुष्यों की ओर से है तो हमें भीड़ का डर है, क्योंकि वे सब यूहन्ना को भविष्यदूक्ता मानते थे। सो उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते, उसने उनसे कहा, तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये काम मैं किस अधिकार से करता हूँ।" (मत्ती 21:23-27)।

यीशु जब कई स्थानों पर प्रचार करने जाता था तो यहूदी धर्म के गुरू और फरीसी उसे किसी न किसी रूप में फंसाना चाहते थे। उससे अक्सर टेढे-मेढ़े सवाल किया करते थे। यीशु भी बड़े अधिकार से उन्हें उत्तर दिया करता था। और इसलिये कई धार्मिक गुरू उसके शत्रु बन गये थे। वे इस सवाल का उत्तर अपने मन में तो

जानते थे परन्तु उसका जवाब नहीं देना चाहते थे। उन लोगों के लिये यह एक विशेष सवाल था कि यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से है? आज हमारे सामने भी बहुत से प्रश्न रखे जाते हैं और एक विशेष प्रश्न जो पूछा जाता है कि जो हम धार्मिक रूप से मानते हैं क्या वह बाइबल से है? एक अहम प्रश्न जो पूछा जाता है कि क्या जिस चर्च के आप मैम्बर हैं उसके बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं? क्या रोमन कैथोलिक चर्च का नाम बाइबल में है? यदि आप अपनी बाइबल को पढ़ते हैं तो कहीं भी आपको आरसी चर्च, लूथरन, मैथोडिस्त, मैनोनाईट, बैपटिस्ट चर्च, सालवेशन आरमी, यहोवा विटनस, पैन्टीकास्टल चर्च और भी ऐसे बहुत से साम्प्रदायिक चर्च हैं जिनके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते।

हम बाइबल में यह भी पढ़ते हैं कि कलीसिया का अधिकार या मुखिया प्रभु यीशु है (इफि. 5:22, कुलु. 1:18)। यह मुखिया ऊपर से है, और साम्प्रदायिक कलीसियाओं के सिर पृथ्वी से है। मनुष्यों द्वारा बनाई गई कलीसियाओं को अधिकार उनके पृथ्वी के अधिकारियों से मिलता है और मसीह की कलीसिया का अधिकार केवल बाइबल से है यानि जो बाइबल कहती है हम वो ही करते हैं। बाइबल हमारा फाइनल अधिकार है।

आज कई लोग यह सिखाते है तथा प्रचार करते हैं कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना जरूरी नहीं है परन्तु यीशु ने बड़े अधिकार से यह कहा था कि "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" (मत्ती 28:19) अब यह अधिकार ऊपर से यानि परमेश्वर से है; परन्तु अनेकों लोग इसका विरोध करते है। इस अधिकार के विषय में हम एक और स्थान पर पढ़ते हैं जहां साफ लिखा हुआ है कि, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगां" (मरकुस 16:16)। फाईनल अधिकार न पोप का होता है और न किसी बिशप या पादरी का होता है। पोप तथा पादरी जैसी पदविया स्वर्ग से या बाइबल से नहीं है।

मसीह की कलीसिया के फैसले बाइबल को अधिकार बनाकर लिये जाते हैं, परन्तु साम्प्रदायिक कलीसियाओं में चर्च के फैसले काउंसिल, सायेनॉड तथा कन्वैनशन द्वारा लिये जाते है और इसलिये बहुत सारी बातें ऐसी सिखाई जाती है जिनका बाइबल से कोई लेना देना नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि यह बातें हम सालों से करते आये हैं और हमारे बाप दादा भी यही किया करते थे। परन्तु मेरे दोस्त, जो आप धार्मिक रूप से कर रहे हैं क्या वो ऊपर से है या बाइबल के अनुसार है? आज परमेश्वर अपने वचन के द्वारा और अपने पुत्र के द्वारा हमसे बातें करता है। (इब्रानियों 1:1-2)।

मुझे दु:ख होता है कि विश्वासी लोग बाइबल को तो मानते हैं लेकिन बाइबल की बातों को नहीं मानते एक दिन हमारा न्याय बाइबल से होगा क्योंकि यह परमेश्वर का अधिकार सारी मनुष्यजाति को दिया गया है। (यूहन्ना 12:48-50)।

मसीही नाम हमें ऊपर से यानि बाइबल से दिया गया है। तब क्यों हम साम्प्रदायिक नामों से जाने जाते हैं। चेले सबसे पहिले अन्ताकिया में मसीही कहलाये। (प्रेरितों 11:26)। यदि कोई मसीही होने के कारण दु:ख पाये तो लज्जित न हो (1 पतरस 4:16)। पहलि शताब्दी में लोग केवल मसीही नाम से जाने जाते थे।

बच्चों का बपतिस्मा बहुत प्रचलित है। सारे संसार में छोटे-छोटे बच्चों को इसलिये बपतिस्मा दिया जाता है, क्योंकि शिक्षा यह दी जाती है कि आदम के पाप के कारण बच्चे जन्म से पापी होते हैं। जबकि बाइबल यह शिक्षा देती है कि छोटे शिशु निष्पाप होते हैं। (मत्ती 18:3)। बपतिस्मा उनके लिये होता है जिन्हें भले बुरे का ज्ञान होता है। शायद जब आप छोटे बच्चे थे तब माता-पिता ने आपका बपतिस्मा कराया हो परन्तु क्या वो बपतिस्मा बाईबल पर आधारित था? वो बपतिस्मा नहीं बल्कि छिड़काव था, क्योंकि बपतिस्मे का अर्थ जल के भीतर गाड़े जाना है। (प्रेरितों 8:36-39)। कुलुस्सियों 2:12 के अनुसार हम बपतिस्मे द्वारा गाड़े जाते हैं। क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया कि बच्चों का बपतिस्मा कहां से आया? स्वर्ग से या मनुष्यों से? बपतिस्में से पहिले पापों से मन फिराने की आवश्यकता है। (प्रेरितों 2:38)। क्या छोटे बच्चे को मन फिराने की आवश्यकता है? जिस प्रकार से आप आराधना करते है क्या वह मनुष्यों के धर्मोपदेश या शिक्षाओं पर आधारित है? यीशु ने कहा था, ये लोग होटों से तो मेरा आदर करते हैं परन्तु इनके मन मुझसे दूर है। (मत्ती 15:8, 9)। चर्च आफ क्राईस्ट में प्रत्येक रविवार को प्रभु भोज लिया जाता है, क्योंकि वचन में इसकी आज्ञा दी गई है। (प्रेरितों 20:7) कई लोग महीने में एक या दो बार प्रभु भोज लेते हैं। स्वर्ग से या बाइबल में शिक्षा दी गई है कि सप्ताह के पहिले दिन अपनी आमदनी अनुसार मसीही लोग चंन्दा देते हैं, परन्तु मनुष्यों की शिक्षा है, कभी भी चन्दा इक्ट्ठा कर लो। (1 कुरि. 1:2)।

मित्रो, मैं चाहूंगा कि आप इस बात पर विचार करें कि मसीहीयत में जो मेरा विश्वास है या जो मैं मानता हूं क्या वो मनुष्य की शिक्षाओं पर आधारित है या बाइबल अनुसार हैं?

आपने कहाँ से सीखा है?

सनी डेविड

बाइबल में रोमियों 10:17 में लिखा है कि "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" वास्तव में यह एक सिद्धान्त है। किसी भी बात पर विश्वास करने से पहले, हम उस बात के बारे में सुनते हैं, या पढ़ते हैं, या देखते हैं। हम में से किसी ने भी प्रभु यीशु मसीह को नहीं देखा है। पर हम ने उसके बारे में पढ़ा है और सुना हैं। पर हमारा विश्वास वही होता है, जो हम सुनते हैं या पढ़ते हैं। अब, जैसे कि, कुछ लोग यह विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह एक अच्छा शिक्षक था और एक

धार्मिक गुरू था, पर इसके अलावा और कुछ नहीं था। अब ऐसा विश्वास वे क्यों करते हैं? निश्चय ही उनका विश्वास बाइबल में लिखी बातों पर आधारित नहीं है, पर ऐसा उन्होंने कहीं से या किसी से सुना है। क्योंकि बाइबल तो हमें यीशु मसीह के बारे में यह बताती है, कि वह स्वयं परमेश्वर और परमेश्वर का एकलौता पुत्र है। (यूहन्ना 1:1, 14)। वह आदि से परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था, और मनुष्य का उद्धार करने के लिये ईश्वरत्व से अलग होकर, स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था, और इसलिये वह पृथ्वी पर परमेश्वर का एकलौता पुत्र कहलाया था। सो वह बड़ा ही महत्वपूर्ण है, कि आपने किस बात के बारे में कहां से सुना है।

अब ऐसे ही कुछ लोग विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह की मसीहीयत पश्चिमी देशों का धर्म है। पर वास्तविकता क्या है? प्रभु यीशु मसीह का जन्म कहाँ हुआ था? अमरीका में या इंग्लैण्ड में? मसीह को क्रूस पर चढ़ाकर कहाँ मारा गया था? और सबसे पहले मसीह के सुसमाचार का प्रचार कहाँ किया गया था? बाइबल के अनुसार, यीशु मसीह का जन्म और उसके सब काम, उसकी मृत्यु और जी उठना और स्वर्ग पर वापस चले जाना, और उसके सुसमाचार का प्रचार किया जाना, ये सब बातें यरुशलेम में पूरी हुई थीं; और यरुशलेम एशिया में है। इसलिये, यह विश्वास करना कि मसीहीयत पश्चिमी देशों का धर्म है सही नहीं है। क्योंकि इससे भी पहले, कि पश्चिमी देशों में मसीह का सुसमाचार पहुंचता, प्रभु यीशु मसीह के अनेकों अनुयायी एशिया में मौजूद थे।

प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था कि, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इंकार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।" (लूका 9:23) इसलिये, यह विश्वास करना कि किसी को सांसारिक वस्तुओं का लालच देकर मसीह का अनुयायी बनाया जा सकता है बिल्कुल सही नहीं है। क्योंकि मसीह का अनुयायी बनने के लिये स्वयं प्रत्येक व्यक्ति को एक यह व्यक्तिगत निश्चय करना आवश्यक है, कि क्या वह प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने को तैयार है? क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने का अभिप्राय इस बात से है, कि जो व्यक्ति मसीह का अनुसरण करना चाहता है; मसीह का एक अनुयायी बनना चाहता है; अर्थात् एक मसीही बनना चाहता है, उसे इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए, व्यक्तिगत रूप से, कि मसीह के पीछे चलने के लिये मैं हर एक बुराई और परीक्षा का सामना करने के लिये, हर एक त्याग और बलिदान करने के लिये तैयार हूँ। मसीह के पीछे चलने का अर्थ यह नहीं है, कि 'मुझे क्या मिलेगा?' पर इस बात से है कि, 'मैं मसीह के लिये क्या देने को तैयार हूँ?' और जब इस दृष्टिकोण को लेकर हम मसीह के पास आते हैं, तो हम जानते हैं कि जो हमें मसीह से मिलेगा, वह यह संसार नहीं दे सकता। क्योंकि मसीह में हमें आत्मिक शांति और आनन्द मिलता है। मसीह ने हमें मुक्ति और उद्धार देने के लिये अपने आप को हमारे पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान दिया था, ताकि हमें उसके द्वारा पाप

से छुटकारा और स्वर्ग में हमेशा की जिंदगी मिल जाए।

पर मसीह ने कहा था, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इंकार करके और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे आए। इसलिये यह विश्वास करना, कि कोई मनुष्य अपने जन्म से ही एक मसीही है, बिल्कुल गलत है। क्योंकि जब किसी का जन्म होता है, तो वह नन्हा बालक एक स्वर्गदूत की तरह पवित्र होता है। हो सकता है, उसके माता-पिता चरित्रहीन और पृथ्वी पर प्रत्येक पाप से जुड़े हुए हों, या चाहे वे बड़े ही अच्छे और चरित्रवान हों। पर जब एक बच्चा जन्म लेता है, तो उस में कोई पाप नहीं होता। पर वही बालक जब बड़ा हो जाता है, जब उसमें अच्छाई और बुराई को समझने की क्षमता आ जाती है, तो उस समय वह स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर की दृष्टि में एक पापी बन जाता है। और तब यह आवश्यक है, कि वह यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाए, और पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये प्रभु यीशु मसीह की आज्ञानुसार जल के भीतर गाड़े जाकर बपतिस्मा ले, जैसे कि बाइबल से हम सीखते हैं। (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:37, 38, 47; रोमियों 6:3-5)।

इसलिये यह विश्वास करना, कि जब एक बच्चा कुछ हफ्तों का हो जाए तो उसका बपतिस्मा करवाना चाहिए, बिल्कुल गलत है। यह बाइबल की शिक्षा नहीं है। बाइबल ऐसा कहीं नहीं सिखाती। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा छोटे बालकों के लिये नहीं है। किन्तु मसीह ने कहा था, जैसा कि हम मरकुस 16:16 में पढ़ते हैं, कि जो विश्वास करके बपतिस्मा लेगा उद्धार उसी का होगा। लेकिन मनुष्यों ने मसीह की शिक्षा को उल्टा करके सिखाना और मानना आरंभ कर दिया है। वे कहते हैं, कि उद्धार पाने के लिए पहले बपतिस्मा दे दो, जब बच्चा छोटा हो, और बाद में बड़े होने पर उसे विश्वास करने की शिक्षा दो। हजारों और लाखों लोग आज भी ऐसा ही मान रहे हैं और ऐसा ही कर रहे हैं। पर यह बातें उन्होंने कहाँ से सीखी है? यह शिक्षा उन्होंने इंसानों से सीखी हैं, क्योंकि बाइबल ऐसा नहीं सिखाती है। और कितनी भयानक है यह शिक्षा, इस बात को हम इस प्रकार देखते हैं, कि जिन लोगों का बपतिस्मा उनके माता-पिता ने बालकपन में करवा दिया होता है, जब उन्हें सिखाया जाता है, कि बाइबल यह कहती है, कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह में विश्वास करके उद्धार पाने के लिये और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए, तो उनका जवाब यह होता है कि, "हमारा बपतिस्मा तो बचपन में ही हमारे माता-पिता ने करवा दिया था।" और इस कारण से वे परमेश्वर की आज्ञा मानने से इंकार कर देते हैं।

सो यह बात बड़ी ही गंभीर है, कि जिन बातों को हम मानते हैं; जिन पर हम विश्वास करते हैं, उनका स्त्रोत क्या है, अर्थात् उन्हें हमने कहां से प्राप्त किया है और कहां से सीखा है? क्या वह परमेश्वर के वचन की शिक्षा है या मनुष्यों की शिक्षा है? क्योंकि प्रभु यीशु ने ऐसे लोगों के बारे में जो मनुष्यों की शिक्षाओं और

विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं, मत्ती 15:9 में कहा था, कि वे लोग व्यर्थ में मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके मानते हैं।

परमेश्वर ने सारी मानवता के लिये अपनी सम्पूर्ण इच्छा को हमेशा के लिये अपनी पुस्तक बाइबल में प्रकट कर दिया है। और यह मनुष्य का कर्त्तव्य है, कि वह परमेश्वर की इच्छा को जाने और उस पर चले। परमेश्वर किसी भी इंसान को अपनी इच्छा पर चलने के लिये अपनी बात को मानने के लिये मजबूर नहीं करता। उसने मनुष्य को बनाया है, और मनुष्य पर प्रकट किया है, कि वह उससे क्या चाहता है। बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्य को बताया है, कि आरंभ में उसने मनुष्य को पवित्र और पाप के बिना बनाया था। पर अपनी ही इच्छा से मनुष्य ने अपने आप को परमेश्वर से अलग कर लिया है। और परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलवाने के लिये क्या किया है। किस तरह से इंसान अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के योग्य, अर्थात् उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकता है। और यह कर्त्तव्य प्रत्येक मनुष्य का है कि वह परमेश्वर की इच्छा को जाने और उस पर चलकर अपनी जीवन यात्रा को पृथ्वी पर पूरा करे। क्योंकि परमेश्वर ने बाइबल में यह भी बताया है, कि एक दिन वह सब लोगों का न्याय करेगा; और वह न्याय वह उन्हीं बातों के आधार पर करेगा जिन्हें परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में लिखवाकर हमें दिया है। बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। बाइबल के द्वारा परमेश्वर ने अपनी इच्छा को सारी मानवता पर प्रदर्शित किया है। और यही कारण है कि क्यों मैं बार-बार आपका ध्यान बाइबल में लिखी बातों पर दिलाता हूँ।

परमेश्वर अपनी इच्छा पर चलने के लिये हम सब को बुद्धि और शक्ति दें।

कलीसिया का अर्थ

जे. सी. चोट

कोई भी व्यक्ति इससे इंकार नहीं करेगा कि बाइबल एक कलीसिया के विषय में बतलाती है। परन्तु किस की कलीसिया? कौन सी कलीसिया? कैसी कलीसिया? ये और इसी प्रकार के अन्य प्रश्नों के उत्तर हमें बाइबल में से मिलते हैं, परन्तु सबसे पहले हम यह मालूम करें कि कलीसिया क्या है? व इसे ठीक से समझने के लिये आरंभ में हम ये देखें कि यह क्या नहीं है? जिस कलीसिया के विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं वह कैथलिक, प्रोटेस्टैन्ट या यहूदी नहीं है। वह साम्प्रदायीक अथवा बहु-साम्प्रदायीक नहीं है। वह एक राजनीतिक संगठन या कोई सामाजिक संगठन नहीं है, और न ही वह ईंटों का बनाया हुआ एक सभा-घर है। अब यदि इनमें से यह कुछ भी नहीं है, तब यह क्या

है? अधिकांश लोग कलीसिया के विषय में सत्य को नहीं जानते, वे यह भी नहीं जानते कि कलीसिया क्या है। परिणाम स्वरूप वे नहीं समझते कि इसका उद्देश्य, महत्व, और कार्य क्या है। परन्तु बाइबल स्पष्टता से यह सब बतलाती है। कलीसिया, यह शब्द यूनानी भाषा में के एक शब्द एक्कलीसिया से लिया गया है जिसका अर्थ है "बुलाए हुए।" तदनुसार, कलीसिया बुलाए हुए लोगों का एक झुंड है, वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। (कुलुस्सियों 1:13)। यह मसीह की आत्मिक देह है (1 कुरिन्थियों 12: 27), उन सब से मिलकर बनी हुई जिन्होंने मसीह की आज्ञाओं को माना है (इब्रानियों 5:8,9), और इसलिये उससे उद्धार प्राप्त करके उसी के द्वारा कलीसिया में मिलाए गए हैं। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:47)। दूसरी तरह से हम इसे यूं कह सकते हैं कि कलीसिया मसीह के अनुयायीयों से मिलकर बनी हुई है।

कलीसिया शब्द बाइबल में हमें दो भाव से मिलता है। पहले, इसे सार्वदेशिक भाव में कहा गया है। यीशु मसीह का यही उद्देश्य था, जब उसने कहा, "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)। बाइबल में और भी बहुत से स्थानों पर कलीसिया शब्द का उल्लेख इसी प्रकार से हुआ है। कलीसिया को सार्वदेशिक भाव में कहने का अभिप्राय यह है कि जहां भी संसार में कलीसिया हो, यदि वह बाइबल की कलीसिया है, तब यह वही कलीसिया है जिसे यीशु मसीह ने बनाने को कहा। दूसरे, इसे स्थानीय भाव में कहा गया। उदाहरणार्थ, जब पौलुस रोम में कलीसिया को लिख रहा था, तब दूसरी मंडलियों का उल्लेख करते हुए, उसने कहा, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)। वह विभिन्न कलीसियाओं के विषय में नहीं कह रहा था, साम्प्रदायिक रूप से, परन्तु उसका अभिप्राय प्रभु की कलीसिया की अन्य स्थानीय मंडलियों से था। इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए, परमेश्वर के वचन में हम पढ़ते हैं, कुरिन्थुस में की कलीसिया, थिस्सलुनीकियों में की कलीसिया, इत्यादि। (1 कुरिन्थियों 1:2, 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; प्रकाशितवाक्य 1:11)। बहुतेरे लोगों को इसे समझने में कठिनाई होती है क्योंकि कलीसिया के बारे में केवल साम्प्रदायीक भाव में विचार करने के वे आदी हो चुके हैं। परन्तु परमेश्वर के वचन में एक भी सम्प्रदाय के विषय में आप नहीं पढ़ सकते। **उक्त** पदों में अन्य स्थानों में की मंडलियों का वर्णन हुआ है और विभिन्न स्थानों में प्रत्येक मंडली प्रभु की कलीसिया है, परन्तु वे सब एक साथ मिलकर सार्वदेशिक कलीसिया होती है। इसे कोई भी सरलता से समझ सकता है यदि साम्प्रदायिकता को भूलकर बाइबल की ओर फिरे, और उसी प्रकार से इसे देखने का प्रयत्न करे जिस प्रकार से प्रभु ने इसे दिया।

कलीसिया का अर्थ और अधिक समझने के लिये परमेश्वर के वचन में से देखें, और ध्यान दें कि बाइबल बतलाती है कि कलीसिया:

1. **मसीह की देह है।** यह मसीह की आत्मिक देह है, और मसीह इसका सिर है। (इफिसियों 5:23)। केवल एक ही देह है। (इफिसियों 4:4)। और यह एक देह एक कलीसिया है। (कुलुस्सियों 1:18)।

2. **परमेश्वर का घर है।** परमेश्वर के वचन में घर का अभिप्राय परिवार से है, इससे हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि कलीसिया परमेश्वर का परिवार है। 1 तीमुथियुस 3:15 में पौलुस कहता है कि परमेश्वर का घर जीवते परमेश्वर की कलीसिया है। परमेश्वर पिता है, और हम उसकी संतान है। (गलतियों 3:26, 27; इफिसियों 1:3)।

3. **परमेश्वर का राज्य है।** राज्य एक राजा की ओर संकेत करता है, और तदनुसार यीशु मसीह राजा है। (प्रकाशितवाक्य 17:14)। परन्तु, यदि वह राजा है तब राज्य का होना निश्चित है, और वह वर्तमान है। (प्रेरितों 8:12)। हम उसकी प्रजा है, समस्त संसार उसकी सीमा है, और नया नियम उसकी व्यवस्था अर्थात् **विधान** है। यह कलीसिया है (मत्ती 16:18, 19)।

4. **प्रभु की दाख की बारी है।** यीशु मसीह दाखलता है और व्यक्तिगत रूप से सब मसीही उसकी डालियां है। (यूहन्ना 15:1-8)। यहां अभिप्राय है दाख की बारी में काम करना और प्रभु के लिये फल लाना।

इस प्रकार से कलीसिया का अर्थ स्पष्ट हो गया, इस विषय पर परमेश्वर के वचन के प्रकाश में अध्ययन कीजिए, और स्वयं ही देखिये कि बाइबल क्या शिक्षा देती है? यदि कलीसिया के विषय में आप उस प्रकार से देखने का प्रयत्न करेंगे जैसे कि परमेश्वर चाहता है, तब आप के सब विचार और भाव बदल जाएंगे, और कदाचित् आप का जीवन भी।

अपने विश्वास से गिर जाना गिरने के जवाब में परमेश्वर के नियम

बैटी बर्टन चोट

सृष्टि में आरंभ से ही परमेश्वर का इरादा पुरुष को अपने घर का प्रमुख बनाने का था। फिर भी स्त्री की अगुआई में अपराध होने के कारण नई पाबंदियां और नियम बना दिए गए।

हव्वा और आदम द्वारा निषेधित फल खाने के बाद, उन्हें समझ में आया कि उन्होंने पाप किया है और पहली बार उन्हें परमेश्वर के भय का अहसास हुआ।

तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था, उसका शब्द

उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा तू कहां है?

उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा था इसलिये छिप गया।

उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है? (उत्पत्ति 3:8-13क)।

परीक्षा की इस दुखद कहानी में हव्वा ने परिवार का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया और आदम ने उसे ऐसा करने दिया। पर जब परमेश्वर सामने आया तो क्या उसने उन बदलावों को मान लिया, जो उन्होंने अपनी भूमिकाओं में कर लिए थे?

नहीं! परमेश्वर ने आदम को बुलाया। क्या परमेश्वर को पता था कि पाप हुआ है? और क्या उसे पता था कि अपराध करने में अगुआई किसने की थी? बेशक उसे मालूम था, क्योंकि परमेश्वर तो अन्तर्यामी है, वह सब कुछ जानता है। परन्तु परमेश्वर ने परिवार के लिए नेतृत्व की इस जिम्मेदारी को देते हुए आदम को इसका मुखिया बनाया और जो कुछ हुआ था, इसका उत्तर देने के लिए उसने आदम को ही बुलाया। परमेश्वर के ठहराए क्रम को नकारने की इस पहली घटना में हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि परमेश्वर अपने सिस्टम को न बदलता है और न बदलेगा, मनुष्य चाहे जो कुछ कर ले।

वास्तव में रोमियों 5 अध्याय में हम पढ़ते हैं, इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई (आयत 12) क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे (आयत 15), क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज किया, (आयत 17)। परमेश्वर ने संयोग से स्त्री के बजाय पुरुष का शब्द इस्तेमाल नहीं किया। पवित्र शास्त्र के इस अध्याय में तीन कथनों का बार-बार कहा जाना हमें बता रहा है कि निषेधित फल को खाने में अगुआई चाहे हव्वा ने ही की थी पर पहले आदम के परिवार में लीडरशिप के अपने अधिकार का इस्तेमाल करने में नाकाम रहने पर ही पाप संसार में आया। परमेश्वर के रिकॉर्ड में मनुष्यजाति पर पाप और उसके परिणाम में मृत्यु का आना स्त्री के द्वारा नहीं बल्कि पुरुष के द्वारा हुआ है।

पहला अपराध होने पर सर्प को, स्त्री को, और पुरुष को उनके पाप के कारण नये नियम और दण्ड बताए गए थे, पर यहां हमारी विशेष दिलचस्पी हव्वा से कहे गए शब्द है कि मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढ़ाऊंगा, तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा (उत्पत्ति 3:16)।

मृत्यु, शारीरिक हो चाहे आत्मिक, इसका कारण पाप ही था। फिर भी, पीड़ा और दु:ख हव्वा पर ही क्यों डाले गए? क्या इन दोनों का मृत्यु के साथ निकट सम्बंध हैं? वास्तव में क्या तीनों ही पूर्ण के भाग नहीं हैं?

पाप के कारण संसार में दुख और पीड़ा आए थे, और मनुष्यजाति के अधिक संवेदनशील और भावनात्मक भाग के रूप में स्त्री को इन क्षेत्रों में बड़ा बोझ उठाना था। बच्चे जनने की पीड़ा की तरह, उसके बच्चों के गर्भधारण की पीड़ा को बढ़ा दिया गया। इसके अलावा उसे अपने पति के अधिकार के और भी अधीन कर दिया गया, जिसमें उसकी लालसा अपने पति की ओर होनी थी और उसने उस पर प्रभुता करनी थी।

1 पतरस 3:1-7 में हम उन पत्नियों और पतियों को जो मसीही हैं, दिए गए निर्देशों को पढ़ते हैं, हे पत्नियों तुम भी अपने-अपने पति के अधीन रहो। तुम्हारा शृंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथने और सोने के गहने, या भांति भांति के कपड़े पहिनना। वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियाँ भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थी, अपने आपको इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं। जैसे सारा अब्राहाम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी। इसी प्रकार तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो, तो उसकी बेटियां ठहरोगी।

वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाए।

ये आयतें हमें बताती हैं कि अधिकार परमेश्वर का क्रम जिसमें पुरुष को घर का मुखिया और अपने परिवार की भलाई के लिए जिम्मेदार अगुआ बनाया गया, मसीह के आने और उसकी नई व्यवस्था के आरंभ होने से खत्म नहीं हो गया। मसीही स्त्रियों को भी, अपने-अपने पतियों के अधीन रहने, जबकि पतियों को प्रेम और समझदारी से उनकी अगुआई करने की आज्ञा दी गई है।

पर कोई पूछेगा, मान लो कि कोई स्त्री अपने पति से अधिक समझदार है, या मान लो कि दोनों में से वह बेहतर अगुआई कर सकती है। तो क्या इन दोनों मामलों में उसे जिम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए?

नहीं। परमेश्वर ने कहीं पर भी क्रम या तरतीब के अपने ठहराए प्रबंध को दरकिनार करने का अधिकार किसी पुरुष या स्त्री को नहीं दिया है।

परिवार के लिए अधिकार के परमेश्वर के ठहराए क्रम को ध्यान में रखते हुए पुरुष हो या स्त्री, दोनों को जीवन-साथी चुनने में बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। यदि बलवान स्त्री का विवाह निर्बल पुरुष के साथ हो जाता है तो उसकी जिम्मेदारी का एक भाग उसकी जिम्मेदारियों को संभालकर उसे और निर्बल करने के बजाय लीडरशिप की भूमिका में अपने पति को प्रोत्साहित करने के लिए उसकी सहायक जो उससे मेल खाए बनने का है।

इन आयतों में प्रयुक्त में शब्दावली से पता चलता है कि अधिकार की यह बात

केवल पति और पत्नी पर छोड़ दिया जाने वाला फैसला नहीं है। इसके विपरीत हमें याद दिलाया गया है कि–

- स्त्री के कोमल और करुणामय हृदय का परमेश्वर की दृष्टि में मूल्य बड़ा है।
- पुरुष और स्त्री के बीच सही सम्बंध से तय होगा कि उनकी प्रार्थना रुक न जाए।
- पति/पत्नी सम्बंध उनके अपने निर्णय और विचार पर आधारित केवल उनके बीच की बात नहीं है। बल्कि परमेश्वर के साथ उनका आपसी सम्बंध उनके उसकी आज्ञा मानने से प्रभावित होता है।
- किसी भी मामले में हम परमेश्वर की व्यवस्था को दर किनार करके उसे प्रसन्न नहीं कर सकते।

माता–पिता के रूप में बेटे–बेटियों का पालन–पोषण करते हुए, यह कितना महत्वपूर्ण है कि विवाह में बने अधिकार और सम्बंधों के इन गंभीर पहलुओं को हम सही ढंग से सिखाएं, हमारी अपनी प्राथमिकताओं के रूप में नहीं बल्कि परमेश्वर द्वारा दिए नियमों के रूप में बचपन से लेकर शादी के समय तक दी गई भारी शिक्षा क्या जीवन–साथी का चयन करने में विचार बनाने में सहायक नहीं होगी? क्या इससे बच्चों में और चेतना नहीं आएगी कि विवाह दो जनों और परमेश्वर के बीच एक अनुबंध है, और इस कारण इससे जुड़ी हर बात परमेश्वर के नियम के अधीन होनी आवश्यक है?

अधिकार के इस क्रम की, जिसे परमेश्वर ने ठहराया है, अंतिम और स्पष्ट बात 1 कुरिन्थियों 11:3 में मिलती है, जहां पौलुस ने कहा, "सौ मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।"

आपने सुना होगा?

जॉन स्टेसी

आपने सुना होगा कि बहुतेरे लोग आज मसीही एकता की बात करते हैं। एकता का होना जरूरी और सही भी है। परन्तु साम्प्रदायिक कलीसियाएं एकता नहीं पर विभिन्न कलीसियाओं का संगठन चाहती हैं। पहली शताब्दी की मसीहीयत में एकता थी और उन सबका एक ही विश्वास और एक ही उद्देश्य था। एक भी सम्प्रदाय, प्रोटेस्टैन्ट या कैथलिक, उस समय विद्यमान नहीं था। उस समय मसीहीयत बिना किसी सम्प्रदाय की मौजदूगी के वर्तमान थीं और आज भी ऐसा ही हो सकता है। प्रभु यीशु ने यूहन्ना 17:20–21 में प्रार्थना करके यूं कहा था कि मैं

केवल इन्हीं के लिये, (प्रेरितों के लिए) बिनती नहीं करता परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे प्रतीत करें, कि तू ही ने मुझे भेजा है। यीशु की इस प्रार्थना में जिस एकता का वर्णन मिलता है, वैसी ही एकता की आवश्यकता आज मसीहीयत में है। कुरिन्थुस में मसीही भाईयों को लिखकर 1 कुरिन्थियों 1:10 में, पौलुस ने यूं कहा था, हे भाइयों, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके लोगों के बीच में धार्मिक फूट विद्यमान हो। इफिसियों 4:4-6 में पौलुस धार्मिक एकता के लिये हमें एक सिद्धान्त बताता है, और कहता है, कि एक ही देह है (अर्थात् कलीसिया-कुलुस्सियों 1:18), और एक ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास (अनेकों नहीं, जैसा कि आज कहा जाता है), और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है। अब यदि आज परमेश्वर की इस योजना का पालन सब जगह पर किया जाए तो कहीं पर भी न तो धार्मिक फूट पाई जाएगी और न ही कहीं पर कोई सम्प्रदायिक कलीसिया होगी। रोमियों 16:17 में पौलुस ने कहा था, अब हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है। फूट पड़ने और ठोकर खाने के काररण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो, और उन से दूर रहो। ध्यान दें यहां इस बात पर कि फूट अर्थात साम्प्रदायिक विभाजन बाइबल की शिक्षा के विरूद्ध है।

एक दूसरे पर दोष न लगाएं

डेविड रोपर

जब मसीही लोग असहमत होते हैं पाठ में हमने रोमियों 14 के पहले भाग का अध्ययन आरम्भ किया। शेष भाग इस ताड़ना से आरम्भ होता है, सो आगे हम एक-दूसरे पर दोष न लगाएं (आयत 13क)। यह संकेत देता है कि जो कुछ पौलुस ने 1 से 12 आयतों में जो कहा उसके आधार पर हमें इस निष्कर्ष पर पहुंच जाना चाहिए कि मसीही होने के कारण हमें अब एक दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए।

कई लोग दोषी न ठहराने की पौलुस की ताड़ना का अर्थ यह लेते हैं कि हमें दूसरों की शिक्षा को भी चुनौती नहीं देनी चाहिए, यानी हमें किसी भी दृष्टिकोण को सह लेना चाहिए। वही पौलुस जिसने 15:7 में एक-दूसरे को ग्रहण करने को कहा, ने 16:17, में जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट डालने का कारण होते हैं उनसे दूर रहने को कहा। पौलुस ने कुछ भाईयों को ग्रहण करने

को और अन्यों से दूर रहने को कहा। यह अन्तर क्यों है? हमें हम से अलग विचार रखने वालों को तो ग्रहण करना चाहिए, परन्तु फूट डालने वाली गलत शिक्षा को ठुकराना चाहिए। हम कसी हुई रस्सी पर चल रहे हैं और कोशिश करते हैं कि दाईं ओर न गिर जाएं, जहां हम अपने से अलग विचार रखने वालों का न्याय करें, और साथ ही हम बाईं ओर गिरने की कोशिश करते हैं, जहां हम गलती को ग्रहण करके उसे सह सकें।

मैं इस बात पर फिर जोर देता हूं कि रोमियों 14:1–15:13 विचार के बातों पर ध्यान देता है। इन बातों के विषय में पौलुस ने कहा, सो हम आगे को एक दूसरे पर दोष न लगाएं। हमारे इस वचन पाठ में उसने कम से कम चार कारण दिए कि हमें अब एक-दूसरे पर दोष क्यों नहीं लगाना चाहिए।

क्योंकि हम सब परमेश्वर की महिमा करते हैं (14:5, 6)

असहमति की बात (आयत 5क)

2, 3 आयतों में पौलुस ने मांस खाने या मांस न खाने के मुद्दे का परिचय दिया है। आयत 5 में उसने अलग विचार रखने का एक दूसरा उदाहरण दिया। विचार का आरम्भ होता है, कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है, और कोई सब दिन एक सा जानता है। (आयत 5क)। आमतौर पर माना जाता है कि जो लोग एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानते थे, वे यहूदी मसीही थे, जिनका पालन-पोषण सब्त का दिन और अन्य पवित्र दिनों को मनाने से हुआ था। परन्तु अन्य जातियों के भी विशेष दिन थे। व्याख्या और प्रासंगिकता में सहायता के लिए मैं यहूदी मसीही और सब्त के उदाहरण का इस्तेमाल करूंगा, परन्तु याद रखें कि हम पक्का नहीं कह सकते कि पौलुस के मन में (यहूदी या अन्य जाति) में से कौन था।

मान लें कि आप एक यहूदी हैं, जो जीवन भर सख्त व्यवस्था को मानता आया हो। आप विवेकपूर्ण ढंग से सातवें दिन यहूदी व्यवस्था तथा परमपरा की मर्यादाओं का पालन करते आए हैं। फिर आप मसीही बन जाते हैं। चाहे आप अपने पूरे मन से प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन अपने साथी मसीहियों के साथ आराधना तो करते हैं, परन्तु आपके लिए सब्त को भुला पाना कठिन होगा, जिसे आप दशकों से मानते आए हैं? सातवें दिन उठने पर आपको कैसा लगेगा? क्या आपको यह किसी दूसरे दिन जैसा ही लगेगा? यह बताना आसान है कि यहूदी मसीही व्यक्ति एक दिन को दूसरे से बढ़कर जान सकता है।

अन्य लोग सब दिनों एक सा जानते थे। वे समझते थे कि पुरानी वाचा की रीतियां और संस्कारों को मिटा दिया गया है, यानी क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया है (इफिसियों 2:15; कुलस्सियों 2:14)। सब्त का दिन न मानने के लिए (कुलुस्सियों 2:16) किसी को भी दोषी (दण्डित) नहीं ठहराया जाना था।

रोमियों 14 में पौलुस ने इस विशेष मुद्दे को निर्बल और दूसरे को बलवान नहीं कहा परन्तु गलातियों 4:9–11 में उसने कुछ दिनों को मनाने के लिए कइयों को

डांट लगाई। इसलिए हमें लग सकता है कि इस प्रश्न पर दिनों को मनाने वाला निर्बल भाई था जबकि इन्हें न मानने वाला बलवान भाई था।

कइयों को आश्चर्य होता है कि पौलुस ने दिनों को मनाने के लिए गलातियां के मसीही लोगों के विरूद्ध इतनी कठोर भाषा का इस्तेमाल क्यों किया जबकि रोम के मसीही लोगों से उसने दिनों को मानने वालों को ग्रहण करने को कहा। गलातिया में यह सिखाया जा रहा था कि उद्धार के लिए मूसा की व्यवस्था का पालन करना (जिसमें यहूदियों के पवित्र दिन भी थे) आवश्यक है। शायद इस दिन को रोम में कुछ लोग व्यक्तिगत विश्वास की बात मानते थे, जिसमें दूसरों पर मानने के लिए कोई जबर्दस्ती नहीं की जाती थी।

इस मामले पर बलवान भाई की स्थिति पर एक या दो शब्द कहे जाने चाहिए। उसने हर दिन को एक समान माना। वह हर दिन को साधारण मानता था, यानी वह किसी दिन को विशेष नहीं मानता था। शायद इससे हमारी समझ में सहायता मिल जाए, यदि हम समान शब्द को पीछे कर दें, जिसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। यह हमें हर दिन को सम्मान देने के साथ छोड़ देता है। 'बढ़कर' जिसका अर्थ 'स्वीकृति, सम्मान देना' है। रोमियों 14:5 में इसका अर्थ है कि हर दिन पवित्र माना जाता है।

कोई कह सकता है, पर मैंने सोचा था कि सप्ताह का पहला दिन मसीही व्यक्ति के लिए पवित्र दिन है। यह सच है कि परमेश्वर ने सप्ताह के पहले दिन को आराधना के विशेष दिन के रूप में अलग किया है, यही वह दिन है, जब प्रभु भोज में भाग लेने के रूप में हम रोटी तोड़ने के लिए इक्ट्ठे होते हैं (प्रेरितों 20:7)। तौभी हमें सप्ताह के पहले दिन को ही सप्ताह के एक मात्र पवित्र दिन के रूप में नहीं मानना चाहिए। हर दिन प्रभु के लिए पवित्र किया जाना (अलग रखा जाना) चाहिए। यदि हमारे लिए सोमवार से शनिवार तक के दिन पवित्र दिन नहीं हैं तो रविवार का दिन भी नहीं होगा।

समापन (फिलेमोन 21-25)

ब्रूस मैक्लार्टी

फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र में मुख्य चर्चा आयत 20 का कठिन भाग निकल गया था और शेष भाग में जो कहा गया था उसे संक्षिप्त करना, भविष्य की यात्रा की योजनाओं को बताना, सलाम देना और आशिष की अन्तिम बात कहनी थी। यदि पौलुस को इस पत्र के लिखने में कोई संकोच था तो आयत 21 के संक्षिप्त शब्दों पर पहुंचकर वह अपने शेष विचार फिलेमोन को लिखकर खुली सांस लेकर, आराम और आनन्द कर सकता था।

मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर तुझे लिखता हूं और यह जानता हूं

कि जो कुछ मैं कहता हूं, तू उससे कहीं बढ़कर करेगा।

और यह भी, कि मेरे लिए ठहरने की जगह तैयार रख, मुझे आशा है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा।

इपफ्रास जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी हैं और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं इन का तुझे नमस्कार।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। आमीन।

आयत 21. भरोसा रखकर यह संकेत देते हुए कि कोई निर्विवादित तथ्य है, यूनानी भाषा में पूर्ण कृदंत हैं पौलुस के लिए यह तय मामला था। उसे विश्वास हो गया था कि फिलमोन उसके पत्र का सही उत्तर देगा।

तेरे आज्ञाकारी होने का इस मसीही स्वामी को उसके भगौड़े दास के विषय में लिखने में पौलुस ने संतुलित कार्य करने का एक और उदाहरण दिया। उसने जो सही है करने के लिए फिलेमोन को 'आदेश' देने से मना कर दिया था और उसके बजाय उसने उससे विनती करना चुना था (आयतें 8,9)। तो फिर यहां पर किस अर्थ में आज्ञाकारी शब्द का इस्तेमाल कर रहा था। सम्भवतया पौलुस यहां फिलेमोन के इस मामले में पौलुस की विशेष आज्ञा को मानने के बजाय जो उसने दी थी कि उनेसिमुस के साथ क्या किया जाना चाहिए, इस मामले में परमेश्वर की आज्ञा को मानने की बात लिख रहा था। पौलुस ने आज्ञा नहीं दी थी परन्तु निश्चय ही उसने फिलमोन से परमेश्वर का आज्ञाकारी होने की उम्मीद थी।

आयत 16 में पौलुस ने लिखा कि उसने उनेसिमुस को कुलुससे में "दास से भी उत्तम" के रूप में भेजा था। आयत 21 में उसने भरोसा जताया कि फिलमोन जो उससे कहा गया है उससे कहीं बढ़कर करेगा। बहुत से टीकाकार अनुमान लगाते हैं कि पौलुस के मन में हो या फिलेमोन के कानों में, बढ़कर का क्या अर्थ हो सकता है। क्या पौलुस यह संकेत दे रहा था कि फिलेमोन को चाहिए कि उनेसिमुस को छोड़ दे और रोम में पौलुस के साथ काम करने के लिए उसे वापस भेज दें। बेशक पौलुस की आशा ऐसे ही थी, चाहे उसका इरादा अपने वाक्य रचना में ऐसी आशा जताने का था या नहीं। इस कथन में जो कुछ भी पता चलता है उससे स्पष्ट है कि पौलुस ने उनेसिमुस को और फिलेमोन के नाम पत्र पड़े भरोसे से भेजा था।

आयत 22. बात यह थी, कि मेरे लिए उतरने की जगह तैयार रख। यह समर्थन मांगने से पत्र के अन्त में दो बातें पूरी हुईं। पहली इससे पौलुस की इच्छा का और फिलेमोन और कुलुस्से की इच्छा का आने की आशा का पता चला। दूसरा अपने घर में रहने के लिए जगह तैयार करके पौलुस ने इस विचार पर फिर से जोर दिया कि वह अभी भी फिलेमोन को प्रिय भाई और सहकर्मी मानता है। प्राचीन जगत में दोनों और से आतिथ्य सतकार से एक-दूसरे के प्रति आदर का पता चलता था। इससे न केवल यात्री के लिए मेजबान की स्वीकृति का संकेत मिला बल्कि यात्री के मेजबान की स्वीकृति का भी संकेत मिला। उनेसिमुस के मामले में इन दोनों के बीच चाहे जो भी हुआ हो पर उनकी संगति मजबूत रही थी।

मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा, पौलुस ने कहा आयत 3 के बाद से यहाँ पर पहली बार वह फिलेमोन के अलावा दूसरों से बात कर रहा था। यूनानी धर्मशास्त्र में तुम्हारी और तुम्हें दोनों ही बहुवचन हैं। एक बार फिर से अफ्फिया, अर्खिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया को बातचीत में लाया गया। पौलुस ने माना कि उनसे मिलने का अवसर परमेश्वर की इच्छा से होना था। इस कारण मिलना केवल उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा ही सम्भव होना था।

आयत 23. फिर पौलुस फिलेमोन को यह पत्र लिखते समय अपने साथ रोम में रहने वाले लोगों की ओर से सलाम देने लगा। यहां बताए गए सब लोगों का नाम कुलुससे की कलीसिया के नाम पौलुस के पत्र लिखते समय भी उसके साथ दिखाया गया है (कुलुस्सियों 4:10-14)। इपफ्रास ही वह व्यक्ति था जिसने कुलुस्से में पहले सुसमाचार सुनाया था। पौलुस ने कुलस्सियों के पत्र में उसे "तुम ही में से" बताया (कुलुस्सियों 4:12)। पौलुस के फिलेमोन को लिखते समय इपफ्रास पौलुस का मसीह यीशु में साथी कैदी था शायद पौलुस के नजरबन्द रहने के समय उसके साथ ही था (प्रेरितों 28:30, 31)। तुझे नमस्कार इस आयत में तुझे के लिए एक वचन रूप का अद्‌भुत रूप से लौटना है। यह इपफ्रास की ओर से फिलेमोन के नाम व्यक्तिगत सलाम लगता है।

24. आयत सलाम भेजने वालों की सूची बरनबास की मौसेरे भाई यूहन्ना मरकुस के साथ जारी रहती है। पौलुस को चाहे आरम्भ में उसने निराशा दी थी (प्रेरितों 15:37, 38), परन्तु बाद में वह प्रेरित के लिए भरोसा करने के योग्य और कीमती सम्पत्ति बन गया था (2 तीमुथियुस 4:11)। अरिस्तर्खुस थिस्सलुनीके का मकिदूनी था (प्रेरितों 27:2) जो इफिसुस में दंगे के समय से पौलुस के साथ था। कुलुस्सियों 4:10 में पौलुस ने उसे मेरे साथ कैदी बताया। देमास को अफसोस के साथ ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है जिसने प्रेरित के साथ कुछ समय बिताया परन्तु बाद में इस संसार को प्रिय जानकर उसे छोड़ दिया गया (2 तीमुथियुस 4:10)। प्रिय वैद्य लूका (कुलुस्सियों 4:14) एक अन्य जाति था जिसने पौलुस से भी अधिक नये नियम का भाग लिखा। आने वाली अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए कुछ साल बाद पौलुस ने लिखा, केवल लूका मेरे साथ है। (2 तीमुथियुस 4:11) पौलुस ने इन सभी को मेरे सहकर्मी बताया जो फिलेमोन के लिए उसने कहा था।

आयत 25. पत्र का समापन पौलुस के विशेष ढंग, आशीष की बात के बाद होता है। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। तुम्हारी यहां पर बहुवचन है, जिस कारण पत्र का अन्त वैसे ही अकेले फिलेमोन के बजाय एक बड़े श्रोतागण को ध्यान में रखकर होता है जैसे इसका आरम्भ हुआ था। आत्मा एक वचन है और यह मनुष्य की आत्मा या जीव के सम्बंध में है। इसका अर्थ आत्मिक जीवों के रूप में तुम सब लगता है।

जेसेफ ऐ फिजाइमर ने फिलेमोन पर अपनी टिप्पणी को मार्टिन लूथर के इस उदाहरण से ठीक ही समाप्त किया है।

इस प्रकार हमारे पास एक निजी पत्री है जिससे बहुत कुछ सीखा जाना चाहिए कि भाइयों की सराहना कैसे की जाए, यानी एकलीसिया के लिये नमूना कैसे दिया जाए उनकी देखभाल कैसे करे, जो गिर जाते हैं और गलती करने वालों को कैसे सुधारें; क्योंकि मसीह का राज्य अनुग्रह और दया का राज्य है।

मसीही कौन है?

अर्ल डी ऐड्वर्डस

यह अनंतकाल तक का महत्त्व रखने वाला प्रश्न है जिसका उत्तर हमें बड़े ध्यान से देना चाहिए, क्योंकि हमारे उत्तर को केवल परमेश्वर के उत्तर ही को प्रतिबिंबित करना चाहिए। इस पत्री में पौलुस की आरंभिक टिप्पणियाँ हमें मसीही होने के बारे में परमेश्वर के चित्रण की झलकियाँ दिखाती हैं।

एक मसीही वह है जो कलीसिया का भाग है। पौलुस के अनुसार कोई भी व्यक्ति मसीह की कलीसिया का भाग हुए बिना मसीही नहीं हो सकता। यह पत्री उन्हें लिखी गई जिनसे थिस्सलुनीकियों की कलीसिया बनी थी। अर्थात्, वह कलीसिया जो थिस्सलुनीकियों के मसीहियों से बनी थी।

एक मसीही वह है जो ईश्वरीय स्थानों में है। पौलुस ने कहा था कि कलीसिया परमेश्वर और प्रभु यीशु में है। थिस्सलुनीकियों वाले अपने आत्मिक जीवन को परमेश्वर और मसीह से प्राप्त करते थे, और वे परमेश्वर तथा मसीह के प्रभाव और नेतृत्व में रहते थे। कलीसिया के रूप में, वे परमेश्वर और मसीह के साथ इतनी निकटता से जुड़े हुए थे कि यह कहा जा सकता था कि वे परमेश्वर और मसीह में जीवन व्यतीत करते हैं। यह कैसा विस्मित कर देने वाला विचार है।

एक मसीही वह है जो परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली आत्मिक आशीषों को प्राप्त करता है। पौलुस बड़े खुले रूप से उनके लिए अनुग्रह और शांति की इच्छा रख सका। शांति कलह की अनुपस्थिति से भी बढ़कर है। नए नियम के काल में परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एकता का परिणाम आत्मा की परिपूर्णता और समृद्धि होता था।

अनुग्रह और शान्ति केवल उन्हीं पर आते हैं जो मसीह में हैं। पौलुस को यह नहीं कहना पड़ा, मुझे आशा है कि तुम मसीह में आ जाओगे जिससे तुम उसकी आशीषों को प्राप्त कर सको। वे तो मसीह में थे, और परमेश्वर द्वारा उन्हें प्रदान किए गए अनुग्रह और शांति के लिए हृदयों की पूरी तरह से खोल देने के लिए उकसाने के द्वारा, पौलुस उनके प्रति अपने प्रेम की उनकी ओर बढ़ा सका।

एक मसीही वही है जो मसीह का अनुयायी है। लेकिन जब कोई वास्तव में

मसीह के पीछे हो लेता है, तो जैसा पौलुस ने चित्रित किया है, वैसा बन जाता है, मसीह की देह में एक, दिव्य क्षेत्र में एक, और वह जो मसीह की आशीषों को प्राप्त करने वाला होता है।

औरों के लिए प्रार्थना करना (1:2, 3)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराया कि वह, सीलास और तीमुथियुस उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। उसने दिखाया कि हमें एक दूसरे के लिए प्रार्थना कैसे करनी चाहिए।

ऐसी प्रार्थना जो साथ जुड़े हुए हृदयों से ऊपर जाए। बहुवचन यह संकेत करता है कि तीनों मनुष्य प्रार्थना कर रहे थे। वे तीनों एक होकर प्रार्थना कर रहे थे। संभवत: जितनी बार वे प्रार्थना में एक साथ आते थे वे उन नए विश्वास में आए लोगों का उल्लेख करते थे। एक साथ मिलकर की गई प्रार्थना कितनी सामर्थी होती है।

ऐसी प्रार्थना जो विवरण में विशिष्ट थी। जिस बात के लिए वे धन्यवाद कर रहे थे उसका विशिष्ट वर्णन दिया गया- उनका सक्रिय विश्वास, परिश्रमी प्रेम तथा दृढ़ आशा। एक प्रचारक के लिए उनमें जिन्हें उसने परिवर्तित किया है, मसीही विशेषताओं को प्रकट देखना, प्रोत्साहन की बात है।

ऐसी प्रार्थना जो सारी मण्डली के लिए थी। प्रार्थना, उनमें से केवल एक या दो के लिए नहीं वरन सब के लिए चढ़ाई जाती थी। परमेश्वर की दृष्टि में सभी बहुमूल्य हैं।

ऐसी प्रार्थना जो लगातार की जाती थी। वे लगातार उनके लिए प्रार्थना करते थे। वे केवल किसी एक अवसरपर एक ही बार प्रार्थना नहीं करते थे, वरन बारंबार प्रार्थना करते थे। पौलुस, जो वह प्रचार करता था, उसको अमल में भी ला रहा था, क्योंकि आगे चलकर उसने थिस्सलुनीकियों को उकसाया कि वे निरंतर प्रार्थना में लगे रहें (5:17)।

पौलुस के कथन एक दूसरे के लिये प्रार्थना करने के लिए अद्‌भुत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। अवश्य ही हमें एक दूसरे के लिए और अधिक प्रार्थना करना चाहिए। क्या आप यह नहीं कह सकते हैं कि जब हम अपने भाइयों के लिए प्रार्थना कर रहे होते हैं तब ही हम सर्वोत्तम होते हैं?

अपने भाइयों को प्रोत्साहित करना (1:2, 3)

अन्य बातों के अतिरिक्त, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें लिखा। उसने उन्हें प्रोत्साहित कैसे किया? क्या उसके समान ही, अपने भाइयों के लिए हमारे पास भी प्रोत्साहन के वचन होते हैं?

उनके लिए प्रार्थना करने के द्वारा उसने उन्हें यह बता कर आरंभ किया कि वह उनके लिए प्रार्थना कर रहा है। जब भाई लोग जानते हैं कि हम सत्यता के साथ उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं, तो वे प्रोत्साहित और आशीषित होते हैं।

उनकी सराहना के द्वारा उसने मसीही जीवन जीने में उनकी विश्वासयोग्यता के लिए उनकी सराहना की। जब भाई लोग जानते हैं कि हम उनकी विश्वासयोग्यता के बारे में जानते हैं, तो उन्हें आत्मिक प्रोत्साहन मिलता है।

उन्हें स्मरण करवाने के द्वारा उसने उनके लिए पुष्टि की कि परमेश्वर ने आरंभ से ही उन्हें चुन लिया था। हमारे विश्वास के लिए यह सदा ही प्रोत्साहन का कारण होता है, जब हम स्मरण करते हैं कि हम परमेश्वर के चुने हुओं में से हैं। जो भी मसीह में आता है परमेश्वर उसे बचाता है (इफिसियों 1:3, 4), और उसने अपने सुसमाचार के द्वारा हमें अपने चुने हुए होने के लिए बुलाया है।

प्रत्येक मसीही को प्रोत्साहन देने वाला होना चाहिए, जिस भी किसी अन्य मसीही से वह मिले उसे प्रोत्साहन का वचन दे सके।

थिस्सलुनीकियों के लिए धन्यवादी (1:1-3)

पौलुस ने अपने पाठकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाया। उसने कभी-कभी नहीं वरन निरन्तर अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर का धन्यवाद किया (आयत 2)। वह उनके लिए धन्यवादी क्यों था?

पौलुस उनके विश्वास के कार्य के लिए धन्यवादी था। विश्वास निष्क्रिय नहीं होता है। सच्चा विश्वास सदा ही कोई कार्य प्रस्तुत करता है। याकूब ने लिखा, "मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा (याकूब 2:18)।

पौलुस उनके प्रेम के परिश्रम के लिए धन्यवादी था। आयत 3 में प्रेम के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द है अगापे। यह शब्द नए नियम में सामान्यत: मसीह के प्रेम के वर्णन के लिए प्रयोग किया गया है। हम से इस प्रकार के प्रेम का अनुसरण करने के लिए कहा गया है (देखें इफिसियों 5:2)। थिस्सलुनीकियों ने मसीह के प्रेम का अनुकरण किया, और अब पौलुस इसके लिए उनकी सराहना कर रहा था।

पौलुस उनकी आशा की धीरज के लिए धन्यवादी था। उनकी आशा ने उनकी दृढ़ता को प्रेरणा दी यद्यपि वे सताव से होकर निकल रहे थे और मसीही विश्वास में अभी नये ही थे। उन्होंने अपनी आंखें अनन्त महिमा प्राप्त करने पर टिका रखी थीं (देखें रोमियों 8:18-39)। उनकी यह आशा प्रभु यीशु मसीह में स्थापित थी जो कभी निराश नहीं करता है (आयत 3)।

पौलुस का उसके द्वारा विश्वास में आए लोगों के लिए धन्यवादी होना विश्वास, प्रेम और आशा, पर आधारित था और ये तीनों मसीही अनुग्रह बहुधा एक साथ देखे जाते हैं (देखें 1 थिससलुनीकियों 5:8, 1 कुरिन्थियों 13:13; कुलुस्सियों 1:3-5)। पौलुस इन भाइयों के अच्छे उदाहरण के लिए परमेश्वर का बड़ा धन्यवादी हैं। उनके कार्यों से पौलुस को प्रोत्साहन मिला। हमें भी अपने साथी मसीहियों के भले उदाहरणों से प्रोत्साहित होना चाहिए।

प्रोत्साहित करने वाला विश्वास का कार्य- किसी छोटे से नगर में काम करने वाला अगुवा जो लोगों से मिलने उन्हें प्रोत्साहित करने, और उन्हें सुधारने के लिए

अथक परिश्रम करता है। उसका कार्य उसके विश्वास को दिखाता है।

प्रोत्साहित करने वाला प्रेम का परिश्रम एक दम्पत्ति जो अस्सी वर्ष के हैं और सेवकाई के कार्य में पचास से भी अधिक वर्षों से लगे हैं और अभी भी सेवकाई में हैं। ऐसा समर्पण वास्तव में प्रेम का परिश्रम है।

प्रोत्साहित करने वाली आशा की धीरता – एक वृद्ध महिला जो अमरीका में रहती है और अपने साथ के लोगों के साथ बाइबल अध्ययन करती है, अफ्रीका से आने वाले पत्राचार पाठों को जांचने का कार्य करती है, और सुसमाचार सिखाने के लिए अफ्रीका की यात्रा करने से नहीं थकती। वह यह सब अपनी आशा के धीरज के कारण करने पाती है, जो स्वयं उसके लिए तथा औरों के लिए है।

ऐसे लोग प्रोत्साहित करने वाले होते हैं, परन्तु अपने कार्यों के द्वारा मसीह के साथ चलना दिखाने वाले केवल ये ही नहीं है। अच्छे उदाहरण लगभग प्रत्येक मण्डली में मिल सकते हैं। हमें, पौलुस के समान, विश्वासयोग्य सेवकों के लिए धन्यवादी होना चाहिए जो अपने विश्वास, प्रेम और आशा को दिखाते हैं।

मसीह की सच्ची कलीसिया क्या है?

कलीसिया उन सब लोगों की एक मण्डली है जिन्हें मसीह ने अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है।" (1 पतरस 2:9)। वह एक आत्मिक देह है, जिसमें वे सब लोग हैं जिन्हें उद्धार मिला है।

मसीह की कलीसिया को बड़ी ही आसानी से पहचाना जा सकता है। उसे पहचानने के निशानों को और उसकी शिक्षाओं को नए नियम में इतने अलग ढ़ंग से बताया गया है, कि उन सब सम्प्रदायों और मंडलियों के बीच में भी जिनका आधार मनुष्यों के आदेश तथा उपदेश है, उसे बड़ी ही आसानी से अलग पहचाना जा सकता है।

प्रभु को केवल एक ही कलीसिया की आवश्यकता थी। वह जानता था कि वह एक ही कलीसिया में सब का उद्धार कर सकता है। सो उसने केवल एक ही को बनाया है। उसे दो या दो से अधिक कलीसियाऐं बनाने की क्या आवश्यकता हो सकती थी?

लेकिन इंसान ने, जिसने सदा ही से परमेश्वर की इच्छा का विरोध किया है, मसीह की कलीसिया को भी बदलने का प्रयत्न किया है। मनुष्य ने परमेश्वर की उपासना में कुछ ऐसी बातों को जोड़ा है जिनका परमेश्वर के वचन में स्पष्ट आदेश नहीं मिलता। और उसने कुछ ऐसी बातों को हटा दिया है, जिन्हें परमेश्वर वास्तव में चाहता है। फिर कुछ बातों को, जिन्हें परमेश्वर ने अपनी कलीसिया में आरंभ में रखा था, मनुष्य ने अपनी इच्छानुसार बदल डाला है।

परन्तु इन सब प्रयत्नों के द्वारा मनुष्य को केवल यही सफलता मिली है, कि

फलस्वरूप आज पृथ्वी पर नाना प्रकार के ऐसे-ऐसे सम्प्रदाय मौजूद हैं जिन्हें इसलिये मसीहियत का नाम दिया है ताकि उनमें जिन बातों को माना जाता है वे ऐसी प्रतीत हों मानो वे सब परमेश्वर की ही ओर से हैं। परन्तु मसीह की कलीसिया को बदलने में मनुष्य सफल नहीं हुआ है। वह आज भी वैसे ही मौजूद है।

सच्ची मसीह की कलीसिया आज भी, जैसे कि हमेशा से थी, और हमेशा रहेगी, उन लोगों की मण्डली है-

1. जिन्होंने परमेश्वर के वचन की सही शिक्षा पाई है, और

2. जिन्होंने मसीह के सुसमाचार पर विश्वास किया है, और अपने पापों से मन फिराया है, और मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहकर अंगीकार किया है, और पवित्र शास्त्र की शिक्षा अनुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है और,

3. जो परमेश्वर की उपासना उसी के दिए आदेशों से करते हैं। उसकी आज्ञाओं को, बिना कुछ भी जोड़े, बिना कुछ भी घटाए और बिना किसी तरह के परिवर्तन के मानते हैं, और

4. जो अपने प्रेम को प्रभु के प्रति अपनी सच्ची सेवा से तथा उसकी आज्ञाओं पर चलकर व्यक्त करते हैं।

परमेश्वर की इच्छा को हम कैसे जान सकते हैं?

क्या परमेश्वर ने अपनी इच्छा को लोगों पर प्रकट किया है?

बाइबल के पुराने नियम में जिन बातों को आज हम पढ़ते हैं, वे सब बातें उस समय उन लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा थी जो मसीह की मृत्यु से पूर्व रहते थे। उनके नियम, उनके धार्मिक रिवाज, और उनके बलिदान, सब मूसा की व्यवस्था से थे। परन्तु मूसा की व्यवस्था उस समय समाप्त हो गयी थी जब यीशु क्रूस पर मरा था। (कुलुस्सियों 2:14, 15)। और उसी समय एक नए नियम का आरंभ हुआ था। (इब्रानियों 9:15:10:9, 10)। इसीलिये आज हम मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं है। किन्तु हमारी अगुवाई के लिये हमें आज नया नियम दिया गया है।

आज बाइबल के नए नियम में से जब कोई पढ़ता है, तो यह ऐसे ही है मानो परमेश्वर उस से बोल रहा है। यह बात हमारे लिये महत्वपूर्ण है, क्योंकि जिस कलीसिया को यीशु ने बनाया था उसके बारे में हमें केवल नए नियम में ही मिलता है। और इसीलिये इस संबंध में हम केवल नए नियम से ही देखेंगे।

नये नियम में लिखी बातें परमेश्वर की इच्छा है, वह सच्चाई इस बात से भी स्पष्ट हो जाती है कि उसी ने हमें चेतावनी देकर कहा है, कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना। (1 कुरिन्थियों 4:6)। हमें मना किया गया है कि उस सुसमाचार को छोड़ जो आरम्भ में सुनाया गया था कोई और सुसमाचार हम न सुनाएं। (गलतियों 1:8, 9)। वह कहता है, कि कोई न तो इन बातों में कुछ बढ़ाए और न इस भविष्यवाणी की पुस्तक में से कुछ निकाल डाले। (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)। वह हमें

चेतावनी देकर कहता है कि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। (1 यूहन्ना 4:1)। और वह कहता है, कि जो मनुष्य मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता उसके साथ हम सहभागिता न रखे। (2 यूहन्ना 9-11)।

नये नियम में हमारे लिये परमेश्वर के वे आदेश हैं जिन्हें आज हमें मानना चाहिए। जब पौलुस ने थिस्सलुनिके में कलीसिया को लिखा था तो उसने उन की इस बात के लिये प्रशंसा की थी कि उन्होंने उस वचन को, जो उसने उन्हें सुनाया था, भली प्रकार ग्रहण किया था। उसने उनसे कहा था कि तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर ग्रहण किया है। (1 थिस्सलुनीकियों 2:13-15)।

परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मनुष्यों पर बाइबल के द्वारा प्रकट किया है। इसीलिये पौलुस कहता है, कि विश्वास परमेश्वर का वचन सुनने से आता है। (रोमियों 10:17)।

आज परमेश्वर स्वयं किसी भी मनुष्य से वोह नहीं करता है। वह प्रत्येक मनुष्य से केवल अपनी बाइबल के द्वारा ही बातें करता है। इस पुस्तक में उसकी सम्पूर्ण इच्छा सदा के लिये लिखी जा चुकी है।

वचन को ठीक रीति से काम में लाना

यह समझने के लिये, कि परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी कौन सी बातें आज हमारे ऊपर लागू होती हैं, यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लाएं। (2 तीमुथियुस 2:15)।

वास्तव में बाइबल छियासठ पुस्तकों की एक पुस्तक है। इन पुस्तकों को लगभग 1600 वर्षों में चालीस भिन्न-भिन्न लेखकों ने लिखा था। उन्होंने केवल उन्हीं बातों को लिखा था जिनको लिखने की प्रेरणा उन्हें परमेश्वर से मिली थी। उनमें से कुछ ने परमेश्वर के उन लोगों के इतिहास को लिखा था, जो मूसा की व्यवस्था के काल में रहते थे। कुछ ने उस समय के नियमों के ऊपर प्रकाश डाला है। और कुछ अन्य लेखकों ने मसीह और उसकी कलीसिया के विषय में पहले से की गई भविष्यवाणियों के बारे में भी लिखा है।

बाइबल की छियासठ पुस्तकों को दो मुख्य भागों में बांटा गया है- (1) पुराना नियम जिसमें हमें आदम के समय से लेकर मसीह के जन्म से कुछ ही समय पूर्व तक की बातों के संबंध में बताया है- और (2) नया नियम वो है जिसमें लिखी बातों पर आज हमें विश्वास लाकर चलना चाहिए।

नए नियम की पहली चार पुस्तकें यीशु मसीह के जीवन से संबंधित, बातों पर लिखी गई हैं। यीशु के जीवन से संबंधित बातों को लिखने वाले चार लेखक थे, मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना। वे यीशु के जन्म, उसके प्रारंभिक जीवनकाल, लोगों के बीच में उसके सेवा के कार्यों, उसके द्वारा प्रेरितों को चुन लिये जाने तथा उसके आश्चर्यक्रमों उसकी शिक्षाओं, कलीसिया को बनाने के विषय में की गई

उसकी प्रतिज्ञा, उसे दोषी ठहराए जाने उसके क्रूसारोहण, उसकी मृत्यु उसके गाड़े जाने, तीसरे दिन उसके जी उठने, फिर से वापस आने की उसकी प्रतिज्ञा, उसके द्वारा चेलों को यह आज्ञा देना कि तुम जाकर सारी सृष्टि के सब लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, और फिर अंत में उसके स्वर्गारोहण के बारे में बताते हैं। ये पुस्तकें इसलिए लिखी गई थी ताकि इन्हें पढ़कर लोग मसीह में विश्वास लाएं। (यूहन्ना 20:30-31)।

फिर नए नियम की अगली किताब का नाम है, प्रेरितों के कामों की पुस्तक। इसमें हमें उन बारह चेलों के कामों का वर्णन मिलता है जिन्हें यीशु ने इसलिये चुना था कि उसके स्वर्गारोहण के बाद वे उसके उद्धार के सुसमाचार के काम को आगे बढ़ाएगे। इस पुस्तक को पढ़ने से हमें यह ज्ञान मिलता है, कि प्रेरितों ने किस प्रकार आरंभ में सुसमाचार सुनाया था, आत्माओं को बचाया था, मंडिलयों की स्थापना की थी, और उस समय के लोगों के बीच विभिन्न स्थानों में मंडलियों की उन्नति के लिये क्या-क्या कार्य किए थे। यह किताब हमें यह भी बताती हैं, कि आरंभ में लोग किस प्रकार मसीह के अनुयायी बने थे उद्धार पाने के लिये उन्होंने क्या किया था और कलीसिया में मिलाए जाने के बाद वे कैसे और कब उपासना किया करते थें। इस पुस्तक को इस उद्देश्य से लिखा गया था कि कलीसिया की स्थापना, उद्धार पाने, और प्रचार करने के संबंध में इस में लिखी बाते हमारे लिये आदर्श ठहरें।

नए नियम की बाकी की पुस्तकों को पत्रियों के रूप में कुछ व्यक्तियों या कलीसियाओं के नाम लिखा गया था। इन पत्रियों में ऐसी-ऐसी बातों का वर्णन मिलता है जिनमें हमें वह शिक्षा मिलती है कि एक मसीह जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए और कलीसिया में कौन से काम करने चाहिए और हमें कैसे मसीह की महिमा करनी चाहिए। (इफिसियों 3:21)।

बाइबल का अध्ययन करना एक प्रकार से आराधना करने के समान है। बाइबल को पढ़ने से हम परमेश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रकट करते हैं। इस प्रकार परमेश्वर मनुष्य से बोलता है। उसके वचन की पुस्तक को पढ़ने से हमें उसकी इच्छा का ज्ञान मिलता है। और हम यह भी सीखते हैं कि उसकी कलीसिया क्या है और उसे कैसे आरम्भ किया जा सकता है। लगभग दो हजार वर्षों से वे लोग ऐसा ही करते आ रहे हैं, जो केवल परमेश्वर की ही इच्छा पर चलना चाहते हैं।

प्रिसकिल्ला-यीशु मसीह में एक सहायक

सूज़ी फ्रैड्रिक

बाइबल में महान स्त्रियों का अध्ययन करके हम यह सीखते हैं कि किस प्रकार से उन्होंने परमेश्वर की सेवा की थी तथा हम भी ऐसा ही कर सकते हैं। आईये इस विषय पर प्रिसकिल्ला के उदाहरण को देखें।

जब प्रेरित पौलूस प्रचार के लिये यात्राएं किया करता था, तब उसकी मुलाकात कुरिन्थुस में एक स्त्री और पुरुष से हुई जिनका नाम था अक्विला और प्रिसकिल्ला। इस स्त्री ने पौलूस का काफ़ी अतिथि सत्कार किया था, उसने उसे अपने घर में ठहराया तथा पौलूस उनके घर में लोगों को वचन का प्रचार किया करता था। वह तथा उसका पति पैसे से भी पौलूस की सहायता किया करते थे, वे सब मिलकर तम्बू बनाने का कार्य किया करते थे। (प्रेरितों 18:1-3)।

बाद में प्रिसकिल्ला तथा उसके पति ने पौलूस के साथ मिलकर इफिसुस की यात्रा की। थोड़े समय पश्चात पौलूस ने उन्हें इफिसुस में छोड़ दिया तथा खुद यरूशलेम को चला गया। जब अक्विला और प्रिसकिल्ला इफिसुस में थे तब उनकी मुलाकात एक बहुत अच्छे और धार्मिक, साहसी व्यक्ति से हुई जिसका नाम अप्पुलोस था। अप्पुलौस लोगों को सिखा तो रहा था परन्तु, ''वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात करता था।'' जब अक्विला और प्रिसकिला ने उसे सिखाते हुए सुना तो उन्होंने उसे प्रभु के मार्ग के विषय में और अच्छी तरह से समझाया। इनके सिखाने के पश्चात अप्पुलोस लोगों को सिखाने तथा समझाने में यह निश्चय दिला सका कि ''यीशु ही मसीह है और बड़ी प्रबलता से वह यहुदियों को सब के सामने निरूत्तर करता रहा।'' (प्रेरितों 18:28)।

कुछ समय पश्चात हम देखते हैं कि यह दोनों पति-पत्नि रोम में जाकर रहने लगते है। प्रेरित पौलूस उन्हें कुरिन्थुस से पत्र लिखकर अपना अभिवादन भेजता है और उन्हें कहता है, ''जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी है।'' (प्रेरितों 16:3)। हम यहां यह भी पढ़ते हैं कि कुछ समय पहिले उन्होंने उसकी जान भी बचाई थी तथा उसे बचाने के लिये अपने जीवन को जोखिम में डाल दिया था। इसलिये केवल पौलूस ही नहीं बल्कि सारी कलीसियां उनकी धन्यवादी थी। (रोमियों 16:4)।

हम मसीही स्त्रियों को आज प्रिसकिल्ला के उदाहरण से यह सीखना चाहिए कि वह कितनी अतिथि सत्कार करने वाली तथा खुले मन की स्त्री थी। और परमेश्वर के वचन को सिखाने में निपुण थी परन्तु उसने कभी भी कलीसिया के बीच में खड़े होकर प्रचार नहीं किया क्योंकि बाइबल की शिक्षा है कि, ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें...'' (1 कुरि. 14:34)। आवश्यकता पड़ने पर उसने अपनी सेवाओं को सु-इच्छा से दिया। परमेश्वर की यह इच्छा है कि प्रत्येक मसीही स्त्री अपने जीवन के द्वारा जो भी सेवा प्रभु को दे सकती है उसे प्रसन्नता के साथ दे।

परमेश्वर के वचन को सिखाना एक बहुत आवश्यक कार्य है। दूसरों को परमेश्वर तथा उसके वचन को बताने से एक बहुत बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। प्रिसकिल्ला की तरह हम भी वचन को सिखा सकते हैं परन्तु कलीसिया के बीच में खड़े होकर नहीं ''क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है'' (1 कुरि. 14:35)।